Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 13 ~ Issue 7 (July 2025) pp: 205-208
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

अनामिका की कविता में स्त्री-मुक्ति के विविध आयाम

डॉ. पूनम सूद
एसोसिएट प्रोफेसर
श्री वेंकटेश्वर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

(संदर्भ: जन्म ले रहा है एक नया पुरुष (कविता संग्रह), अनामिका, सम्पा. ऋत्विक भारतीय, प्रलेक प्रकाशन, नई दिल्ली 110044 प्रथम संस्करण, 2023)

समकालीन हिन्दी कविता में अपनी विशिष्ट एवं विलक्षण पहचान बनाने वाली अनामिका पिछले चार दशकों से निरंतर साहित्य साधना में संलग्न हैं। वे हिन्दी की इकलौती स्त्री रचनाकार हैं जिन्होंने एक साथ अनेक विधाओं (कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, डायरी एवं अनुवाद) में साहित्य सृजन करते हुए हिन्दी, अंग्रेजी और रूसी भाषा के पाठकों के बीच संवादधर्मी पुल बनाने का कार्य किया है। अनामिका हिन्दी कविता में साहित्य अकादेमी सम्मान प्राप्त करने वाली पहली महिला कवि हैं। सुधीश पचौरी अनामिका को "मीरा, महादेवी के बाद की तीसरी सबसे बड़ी कवयित्री"1 मानते हैं। अब तक अनामिका के अनेक काव्य-संग्रह प्रकाशित हैं- शीतल स्पर्श एक धूप को (1975), गलत पते की चिट्ठी (1979), समय के शहर में (1990) बीजाक्षर (1993), अनुष्टप (1998), खुरदरी हथेलियां (2004), दूब-धान, (2005) कविता में औरत (2012), टोकरी में दिगन्त (2015), पानी को सब याद था (2019), वर्किंग वीमेंस हॉस्टल और अन्य कविताएं (2022) बंद रास्तों का सफर (2022)।

सर्वप्रथम स्त्री के सम्बन्ध में मुक्ति की अवधारणा हमें थेरियों के यहां मिलती हैं, किन्तु बुद्धकालीन थेरियों की मुक्ति आज की स्त्रियों से भिन्न मुक्ति थी। थेरियों की मुक्ति आध्यात्मिक मुक्ति थी साथ ही बौद्ध मठों के नियमों-विधानों के अनुसार ही अपने का ढालना होता था। फिर परिवार से मुक्त होकर थेरियों का थेरी के नियम अपनाने को विवश होना पड़ता था। किन्तु नई स्त्री की मुक्ति इसलिए भी भिन्न थी कि वे पिता-पति-पुत्र या परिवार से मुक्ति को मुक्ति नहीं मानती। बल्कि पुरुषों में स्त्री-दृष्टि विकसित करने पर बल देती हैं, वह अतिवाद का नाश करना चाहती हैं। लोभ-क्रोध-मोह-काम के उन्नयन पर बल देती है। हालांकि समय-समय पर मुक्ति की अवधारणा बदलती भी रही। मुक्ति की दुरुह अवधारणा को समझाती हुई अनामिका लिखती हैं, "आध्यात्मिक मुहाने से भले ही शुरू हुआ हो मुक्ति का निनाद, घाट-घाट का पानी पिलाती, घोलती-घुलाती अब इसकी धारा चलती है तो इसका पहला अर्थ, 'राजनीतिक दासता से मुक्ति होता है। पर वहां भी यह ठहरती नहीं, आर्थिक मुक्ति के जात-पांत-धार्मिक घेरों और जकड़नों से मुक्ति और अंततः देह-मुक्ति के प्रश्नों से सीधा आ जुड़ती है।2"

प्रस्तुत शोधालेख के अन्तर्गत हम अनामिका की कविताओं के आलोक में स्त्री मुक्ति के विविध आयामों को समझने और समझाने का प्रयास करेंगे।

अनामिका की साहित्यक यात्रा में विशेषकर कविताओं से गुजरते हुए अनेक स्त्रियां मिलती हैं जो मुक्ति को लेकर संघर्षरत दिखती हैं। हालांकि 'मुक्ति' शब्द अपने आप में व्यंजनार्थ रखता है। किन्तु स्त्री-मुक्ति सदियों से स्त्रियों के सम्बन्ध में लगायी गयी वर्जनाओं और निषेधाज्ञाओं से मुक्त करते हुए संवैधानिक मूल्य जैसे समता-स्वतंत्रता हर वर्ग, वर्ण, सम्प्रदाय की स्त्री को प्रदान करना है। स्त्री-मुक्ति अवसर और संसाधनों के सम्यक् बंटवारे पर बल देती है। उस पूर्वग्रहों से मुक्ति भी जो स्त्रियों के विकास में बाधक बनते हैं साथ ही जिसने स्त्री को दोयम दर्जे का बना दिया। जबकि स्त्रियों के सम्बंध में धर्मशास्त्र कहता है, "स्वतंत्रता सर्वत्र वर्जयते"3 स्त्री को स्वतंत्र न करने के पीछे की मंशा आज स्त्रियां भांप चुकी हैं, वे जान चुकी हैं कि स्त्रियों को स्वतंत्रता मिल जाने से उन्हें अवसर और संसाधन मिल जाएंगे, वे स्वावलंबी हो जाएंगी, और स्वावलंबी स्त्रियां भला क्यों किसी की पराधीनता स्वीकारेंगी?

सर्वप्रथम अनामिका स्त्री-मुक्ति को बहनापे से जोड़कर देखतीं हैं, "स्त्री समाज ऐसा समाज है जो वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि संकुचित सीमाओं के पार जाता है और जहां कहीं दमन है चाहे जिस वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि संकुचित सीमाओं के पार जाता है और जहां कहीं दमन है चाहे जिस वर्ग, जिस नस्ल, जिस आयु, जिस जाति की स्त्री त्रस्त है उसको अंकवार लेता है।"4। अनामिका के यहां स्त्रियों की दुनिया बस्ती हैं जहां हर वर्ग, वर्ण की स्त्री संघर्ष करती दिख जाएंगी। वे जान चुकी हैं कि सदियों से उनके साथ छल-कपट होता आया, उनके आगे कर्तव्यों की लम्बी फेहरिस्त रखी गयी, किन्तु अधिकारों की चर्चा कहीं नहीं की गई। वे अब जान चुकी हैं कि मानवाधिकारों के बिना स्त्री दोयम दर्जे की ही बनी रहेगी। इसलिए उनका सारा संघर्ष मानवाधिकारों के सम्यक् बंटवारे के साथ-साथ, गुणों, अवसरों और संसाधनों के सम्यक् बंटवारे को लेकर है।

अनामिका की कविताओं से गुजरते हुए स्त्री की एक बृहत्तर दुनिया मिलती है जिन्हें तीन कोटियों में विभक्त किया जा सकता है:

प्रथम साधारण और मध्यमवर्गीय स्त्रियां जिनमें 'स्त्रियाँ' 'पतिव्रता', 'अभ्यागत', 'चिट्ठी लिखती हुई औरत', 'टूटी-बिखरी पिटी हुई', 'खलनायकों की रूठी स्वकीयाएं', 'मौसियां', 'अनब्याही औरतें', 'एक औरत का पहला राजकीय प्रवास' जैसी कविताओं को रखा जा सकता है। इन स्त्रियों के दुःख साधारण और मध्यमवर्गीय स्त्रियों के दुःख हैं। जहां स्त्री स्वयं को पढ़े-समझे जाने की मांग करती है तो वह चाहती हैं कि उसके दुःख को सस्ता और दो टकिया न समझा जाए। वहीं 'अनब्याही औरतें' कविता में तो स्त्री को अपना मनचीता पुरुष कहीं दिखता ही नहीं इसलिए वह अनब्याही ही रहने का निर्णय लेती हैं। 'मौसियां' कविता में वर्तमान समय की अवसरवादिता पर

व्यंग्य किया गया है, वहीं 'एक औरत का पहला राजकीय प्रवास' में यह बताने की कोशिश की गई है कि स्त्रियां कहीं जाएं आदिम स्मृतियां उनका पीछा नहीं छोड़तीं। उक्त कविता में एक स्त्री राजकीय प्रवास पर गयी है। वह चाहती है कि थोड़ा विश्राम करें किन्तु जैसे ही लेटती है, उसे कोई मटरदाना चुभ जाता है। बल्ब जलते आदिम स्मृतियां उसके मस्तिष्क में कौंध जाती हैं- फिर वह तीन अन्तराष्ट्रीय कॉल करती है- पहले अपने बेटे को, दूसरी अपनी मां को, तीसरा अपने बॉस को। किन्तु तीनों को ही वह एक ही बात कहती हैं- 'तुम हो मेरे सबसे प्यारे।' ऐसे में जब उसकी खुदा के सामने पेशी होती है और उससे पूछा जाता है कि एक ही जुबां से तुमने तीन अलग-अलग लोगों से कैसे कहा, 'तुम हो मेरे सबसे प्यारे !' सबसे प्यारे माने सबसे प्यारे। किन्तु अंत में खुदा ने ही कलम रख दी और कहा, औरत है न इसने गलत नहीं कहा। 'दरवाजा' कविता अपने दुःख से उबरने और अपनी दृष्टि वृहत्तर कर आगे बढ़ने को प्रेरित करती है। आज स्त्री मुक्ति की जो बात की जाती है, वहां ये कविताएं न केवल स्त्री जीवन की विडंबना और विसंगतियों से हमारा साक्षात्कार करवाती हैं बल्कि हमारे भीतर भी करुणासम्बलित न्याय दृष्टि पैदा करती है। 'खण्डिता' कविता में कामगर स्त्री की पीड़ा की अभिव्यक्ति का उजागर किया गया है जिसे प्रायः पितृसत्ता नजर अंदाज कर देती है:

अनामिका के यहां हर वर्ग की स्त्रियां मिलती हैं, ग्रामीण-कस्बाई और महानगरीय स्त्रियां भी। आज कहने को समय बदला है पर क्या सचमुच स्त्रियाँ मुक्त हो पाई? इस सामाजिक यथार्थ को अनामिका की 'पतिव्रता' कविता में महसूसा जा सकता है:

"सत्याग्रह का कुछ ऐसा प्रभाव हुआ/बेवजह पिटने के प्रतिकार में/ वे लम्बे-लम्बे अनशन रखने लगीं/ चार-पांच-सात शाम खटतीं वे निराहार/कि कोई आकर मना ले, फिर एक रात/ गिन्न-गिन्न नाचता माथा/पकड़े-पकड़े जा पहुंचतीं वे चौके तक/ और धीरे-धीरे खुद काढ़कर/खातीं बासी रोटियां/ थोड़ी-सा लेकर उधार नमक आंखों का / तो, सखियों, ऐसा था कलियुग में जीवन/पतिव्रता का...।"5

कविता के अंत में कवयित्री बलाघात देती हुई कहती हैं- 'तो, सखियो, ऐसा था कलियुग में जीवन/पतिव्रता का।' किन्तु क्या आज ऐसी स्त्रियां नहीं जो घर-परिवार में पिता-पति-पुत्र से रूठकर घर के सारे काम किये जा जाती है बस इसी आस में कि कोई आएगा और उनसे पूछेगा 'तुमने खाया?' 'चलो, बहुत रूठना।' 'अब छोड़ो भी।' बल्कि आज घरेलू हिंसा और भी बढ़ गयी हैं, स्त्री पर अत्याचार बढ़ गए हैं। अनामिका की 'गालियां सुन लेने का शील' कविता की निम्न पंक्तियां देखें-

"वैसे तो रहती हैं शाश्वत डायटिंग पर स्त्रियां, पर गालियां खाने में उनका नहीं है जवाब!/ गोलगप्पों की तरह गपागप/गाल फुलाकर, सिर झुकाए, घोंटती हुई थूक, नाक-आंख से पानी/इमली का छलकाती/खाये ही जाती हैं/शाम से सुबह तक खूब मिर्चीदार गालियां-ऊपर से थप्पड़ घूंसे, डांट, ताने-बोनस में/ बाई वन, गेट वन फ्री'।"6

आंकड़े बताते हैं कि स्त्री पर अत्याचार की संख्या दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। वर्जिनिया वुल्फ स्त्री के अपने कमरे की बात उठाई थी, समकालीन स्त्री कवियों ने स्त्री के अपने कमरे की बात उठाई। अनामिका ने तो स्पष्ट लिखा, "जिनका कोई घर नहीं होता/उनकी भला होती है कौन-सी जगह?"7

अनामिका के यहां स्त्रियों की इतनी बड़ी तादाद दिखती है कि उसमें हर वर्ग, वर्ण की स्त्री का यथार्थ झलकता है। वर्तमान समय में स्त्री के भीतर आई चेतना की झलक भी स्पष्ट दिखती है। सदियों से स्त्रियों को बोलने नहीं दिया गया, उनके दुःख को दुःख नहीं समझा गया, किन्तु अनामिका की स्त्रियों की एक विशेषता है कि वे 'प्रतिकार' का उल्टा प्रतिकार नहीं मानतीं। वे गलत का विरोध करती हैं, पर अपने को हिंसक बनाकर नहीं, गांधी की हृदयपरिवर्तन वाली दृष्टि से। उदाहरणार्थ की 'स्त्रियां' कविता की निम्न पंक्त्यिां देखें- जो पढ़ी-लिखी शिक्षादीप्त स्त्रियों की दृष्टि का पता देती हैं-

"सुनो हमें अनहद की तरह /और समझो जैसे समझी जाती है/नई-नई भाषा।"8

यहां स्त्रियों को सही से समझे-पढ़े जाने की बात की गई है। अनामिका की अधिकांश कविताओं में स्त्रियों की बदलती छवि एवं उसके सरोकार को भी देखा जा सकता है। अनामिका के अनेक निबंध संग्रहों को पढ़ने के बात अनामिका की कविताओं को और अधिक समझा जा सकता है। उनके निबंध और वैचारिकी प्रधान लेखों को पढ़ने के बाद ही पता चलता है कि अनामिका आतताई और अतिवादियों के 'मन मांजने की जरूरत महसूसती हुई 'मौसम बदलने की आहट' को दर्ज करती हैं।

अनामिका के यहां स्त्रियों का दूसरा वर्ग मिथकीय और ऐतिहासिक पात्र- स्त्रियों को ध्यान में रखकर सृजित किया गया है जिनके साथ तत्कालीन समय ने न्याय नहीं किया जिनमें 'तुलसी का झोला', 'बहिनाबाई', 'पूर्णमिद्य' 'आम्रपाली', 'भामती की बेटियां' जैसी कविताएं प्रमुख हैं। सर्वप्रथम 'तुलसी का झोला' कविता की ये बीज पंक्तियां देखी जाएं जहां रत्ना की तुलसी शिकायत है:

"एक बार नहीं, कुल सात बार/ पास मैं तुम्हारे गयी/सात बहाने लेकर! देखा नहीं लेकिन एक बार भी तुमने/आंखें उठाकर !/ क्या मेरी आवाज भूल गये-/ जिसकी हल्की-सी भी खुसुर-फुसुर पर/तुममें हहा उठता था समुन्दर, वो ही आवाज भीड़ में खो गयी।"9 तुलसी और रतना की कहानी सर्ववीदित है। यहां तुलसी को रतना की मिली झड़प ने बेशक बैरागी बना दिया हो, किन्तु रतना का दुःख कहां समझ पाए- तुलसी। बहुत ढूंढ़ा। सोचा रतना ने मनाकर ले आए वापस घर। किन्तु तुलसी को राम रट लगी थी। फिर चित्रकुट में लगाते फिरते थे चन्दन। रतना एक बार नहीं कुल सात बार गईं उन्हें बुलाने। अंततः वे निराश ही लौट आई। किन्तु लौटीं वे अकेली, टूटकर नहीं, अपना हौसला बुलंद कर एक नए संधान को-

"जैसे की अंशुमाली शाम तक/ अपने झोले में ही!/ रख लेता है अपनी किरणें वे बची-खुची, /कस लेता है खुद को ही /अपने झोले में,/ मैं भी समेट रही हूं खुद को/ अपने झोले में ही!/ अब निकलूंगी मैं भी अपने संधान में अकेली/आपका झोला हो आपको मुबारक!"10

यहां मिथकीय चरित्रों का पुनर्पाठ कर कवयित्री ने रतना के प्रश्नों को उजागर किया है। साथ ही तुलसी को मीठी भर्त्सना भी लगाई है-

"नैहर बस घर ही नहीं होता/होता है अगरधत्त अंगड़ाई, /एक निश्चिन्त उबासी, एक नन्हीं-सी फुर्सत!/ तुमने उस इत्ती-सी फुर्सत पर/बोल दिया धावा तो मेरे हे रामबोला, बमभोला- मैंने तुम्हें डांटा!/ डांटा तो सुने लेते/जैसे सुना करती थी मैं तुम्हारी...!"11 आगे की कथा सभी जानते हैं क्या हुआ। तुलसी का रतना से मोहभंग हुआ और राम रट ऐसी लागी कि एक नवब्याहता स्त्री का दुःख उन्हें दिखा ही नहीं!

'भामती की बेटियां' कविता में नई स्त्री में आई चेतना की धमक को महसूसा जा सकता है। खासकर माँएं यह सोचकर चलती हैं- हमने न पढ़ा तो क्या हमारी बच्चियां अवश्य पढ़ेंगी! हालांकि कविता के चरित्र प्राचीन हैं किन्तु अनामिका ने प्राचीन को नवीन दृष्टि से परिभाषित करते हुए उसका नवीन चरित्र गढ़ते हुए नया दृष्टिबोध पैदा किया है। कविता के विषय को समझते हुए कविता की बीज पंक्तियां उद्धृत की जाएंगी लम्बे समय तक स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखने के पीछे शायद यही मंशा पितृसत्ता की रही कि स्त्रियां उनकी बराबरी में न आ पाएं। मनुस्मृति में स्त्रियों की स्वतंत्रता के निषेध का वर्णन मिलता है। धर्मग्रंथों में स्त्रियों को पराधीन रखने की बात की गयी। किन्तु आज की स्त्रियां शिक्षादीप्त स्त्रियां हैं। अनामिका की माने तो ज्यादातर पुरुष आज भी रामगुप्त की ही दशा में हैं।

स्त्रियों को उनको पाए का धीरादात्त नायक कहीं दिखता ही नहीं। उक्त कविता में पुरुष की स्त्री के प्रति उपेक्षित दृष्टि को दिखाया गया है। वाचस्पति जब पत्नी को ब्याह कर लाए थे तब पत्नी छोटी थी किन्तु वे ग्रंथ लिखने में इतने तल्लीन हुए कि उन्हें यह भी नहीं ध्यान रहा की ग्रंथ पूरा होने का ज्यादा श्रेय तो उनकी पत्नी का है। जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों से अकेले लड़ते हुए भी उनकी तल्लीनता कभी भंग न होने दी उसने और ग्रंथ पूरा हुआ। जब ग्रंथ पूरा हुआ और वाचस्पति ने स्वयं पूछा- 'तुम कौन?' पत्नी का उत्तर- 'मैं आपकी भार्या!' पाकर वे बहुत ही लज्जित हुए-और अपना ग्रंथ पानी में बहा आए। ऐसे में पत्नी उन्हें पानी से बांच लाई। और पानी से गड़मड़ हो आए- अक्षरों को सेनूर और काजर से पुनः उकेर दिया। पत्नी का समर्पण और प्रेम देख वाचस्पति ने निर्णय लिया कि अब ये ग्रंथ तुम्हारे ही नाम से जाना जाएगा। किन्तु पत्नी को यह स्वीकार्य नहीं।

"दीये से नहीं, नहीं छाया से इन्होंने अपनी कलम से लिखा है जो आपके सामानान्तर भाष्य उसका/करने बैठेंगे जब सारे ये दिग्दिगान्तर, मैं चैन की सांस लूंगी- कृपा नहीं, प्रेम का प्रसाद भी नहीं लेंगी, भामती की बेटियां/ग्रंथ अपने स्वयं ही रचेंगी/लगातार इसी तरह इस युग में".12

अनामिका की स्त्रियां अपनी परिस्थितियों से लड़ती हुई आगे बढ़ने का जज्बा नहीं खोतीं। उनके स्त्री पात्रों की विशेषता है कि वे बुद्ध के आलोक में स्वयं प्रश्न गढ़ती हैं और स्वयं ही उत्तर देती हैं।

तीसरा वर्ग हाशिए पर डाल दी गई वैसी स्त्रियों का है जिन्हें 'पटरी से उतरी हुई' अथवा गिरी हुई- 'पतिता' की संज्ञा समाज देता है। किन्तु वह भूल जाता है कि उसमें उनकी ऐसी स्थिति बनाने में समाज में भी उतना ही जिम्मेवार रहता है। अनामिका की इस वर्ग की कविताओं में 'गणिका गली' 'चौदह वर्ष की सेक्स वर्कर', 'आम्रपाली', 'नायिका भेद', 'खलनायकों की रूठी स्वकीयाएं', 'यौन-दासी' जैसी कविताएं आती हैं। 'चौदह बरस की कुछ सेक्स वर्कर' कविता की बीज पंक्तियां देखी जाएं-

"हां, हम हमेशा खुश रहती हैं!/ हंसती हुई दीखती हैं हम हर ओर टीवी में,/ सारे मुखपृष्ठों,/ चौराहों पर!/ पिटकर या खटकर या छंटकर भी/ निकली हों कहीं किसी घर से तो/ जाहिर नहीं होने देतीं!/ हंसी है नए दौर का घूंघट.. एक ड्रेसकोड की तरह!"13

यहां कॉल गर्ल की पीड़ा और उसके दुःख की अभिव्यक्ति हुई है। जिस गली में लोग उजाले में जाने से डरते हैं, सभी के समाने नाम लेने से बचते हैं। कवयित्री ने हाशिये पर धकेल दी गयी पटरी से उतरी स्त्रियों के दुःख अभिव्यक्त कर अपने साहस और बेफिक्री का भी परिचय दिया है।

अनामिका की मुक्ति हर वर्ग, हर तबका, हर नस्ल की स्त्री चाहे जो भी त्रस्त है उसे अंकवार लेती है। अनामिका की दृष्टि उन कोने अंतरों में शोषित-पीड़ित, तीन पालों में खटती स्त्री, चकला घरों में शोषित स्त्री का खेत-खलिहानों में काम करती, परित्यक्त स्त्री, अभ्यागत स्त्री का पक्ष रखती हैं। सही मायने में अनामिका के यहां यों तो मुक्ति बहुत व्यापक अर्थ में व्यंजित होती है, जैसा की नामवर सिंह लिखते हैं,-

"अनामिका अपने लोक को बखूबी जानती हैं। जैसे ही रचना-लोक में प्रवेश करती हैं जीते जागते जानदार चित्र सामने आते हैं। भाषा बदल जाती हैं। सारे मुक्ति--- के सूत्र उनसे ही जुड़ते हैं... एक मुकम्मिल तस्वीर बनती है और मुक्ति का आधार व्यापक होता चला जाता है। स्त्री-मुक्ति के नये आयाम यहां खुलते हैं। अनामिका के लिए स्त्री-मुक्ति मानव-मुक्ति का उत्स है।""""

निष्कर्षतः कहा जा सकता है अनामिका की खी दृष्टि बृहत्तर है- जिसमें मनुष्य मात्र ही नहीं पेड़-पौधे, पशु-पक्षी भी शामिल हैं। जो भी जहां भी दुःखी, परेशान है उसे वे अंकवार लेती हैं। अनामिका की खियों की स्त्री-मुक्ति की बात की जाए तो उनका स्त्रीवाद देशज स्त्रीवाद है, जो प्रतिकार के बजाए बदलाव पर त्याग के बजाए परिष्कार पर दण्ड के बजाए क्षमा पर और न्याय के बजाए करुणासम्बलित न्याय पर बल देता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. संवेद, संपा. किशन कालजयी, अतिथि सम्पा, ऋत्विक भारतीय, फरवरी, 2022, पृ.-12

2. स्त्री विमर्श का लोकपक्ष, लोकपक्ष, अनामिका, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 110002, प्रथम संस्करण 2012, आवृत्ति 2017, पृ.-10

3. आदमी की निगाह में औरत, राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, आठवां संस्करणः

2024, पृ.-17

4. स्त्री विमर्श का लोकपक्ष, अनामिका, पृ.-16

5. जन्म ले रहा है एक नया पुरुष, अनामिका, सम्पा, ऋत्विक भारतीय, प्रलेक प्रकाशन, मुम्बई, प्रथम

संस्करण 2023, पृ.-54

6. वही, पृ.-70

7 वही, पृ.-46

8. ही, पृ.- 44

9. वही, पृ.- 175

10. वही, पृ.-176

11. वही, पृ.-173-174

12. वही, पृ.-142-143

13. वही, पृ.- 194

14. दूब-धान, अनामिका, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2022 के उत्तर फ्लैप पर उद्धृत